केवल उद्धार पर्याप्त नहीं है। सात ऐसे स्तर हैं जिन्हें हर ईसाई को चढ़ना चाहिए ताकि परमेश्वर के सामने परिपूर्णता को प्राप्त किया जा सके। जब हम प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं, उसे स्वीकार कर और बपतिस्मा लेते हैं, तब हमें वहीं नहीं रुकना चाहिए। बाइबल हमें बताती है कि यदि हम आगे नहीं बढ़ते, तो हम बिना साक्ष्य वाले लोग बन सकते हैं, और आध्यात्मिक रूप से मर सकते हैं।

शांति पाकर, पतरस ने पवित्र आत्मा द्वारा उद्घाटित कुछ सात गुणों का उल्लेख किया, जिन्हें प्रत्येक ईसाई को अपने जीवन में अभ्यास करना चाहिए। ये हम **2 पतरस 1:1-12** में पढ़ते हैं। आइए पहले गुण से शुरू करें:

1. भलाई

2 पतरस 1:5– “इसलिए आप अपने विश्वास के साथ भलाई को भी जोड़ें।”

विश्वास पाने के बाद, यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने अच्छे कार्यों के माध्यम से अपने विश्वास को दिखाएँ। भलाई का अर्थ है दूसरों की परवाह करना, सम्मान करना, अनुशासन बनाए रखना और

भरोसेमंद होना।

भलाई केवल दूसरों की नकल करने या उनके व्यवहार के अनुसार नहीं होती। यह न्याय और सच्चाई के साथ दूसरों के लिए करना है, जैसे यीशु ने हमें सिखाया:

*मत्ती 20:14-15 – “जो तुम्हारा है, उसे लो और जाओ; मैं
चाहूँगा कि अंतिम व्यक्ति को भी वही पुरस्कार दूँ।”

बरनबास भी एक भले व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध थे, जिन्होंने विशेष रूप से अस्वीकृत लोगों की परवाह की (**कार्य 11:25-26**)।

भलाई पवित्र आत्मा के नौ फलों में से एक है (**गलातियों 5:22**) और यह बुराई पर विजय पाने का तरीका है:

*रोमियों 12:21 – “बुराई के हाथ न हारो, बल्कि भलाई से बुराई
को हराओ।”

—

2. ज्ञान

2 पतरस 1:5– “…और अपने भलाई के साथ ज्ञान भी जोड़ो।”

यह ज्ञान परमेश्वर को जानने का है, न कि सांसारिक ज्ञान। कई ईसाई इस ज्ञान के बिना खो जाते हैं। यह ज्ञान हमें परमेश्वर की योजनाओं और उनके कार्यों को समझने में मदद करता है।

रोज़ाना परमेश्वर का वचन पढ़ना और पवित्र आत्मा की सहायता से उसे समझना, हमें आध्यात्मिक समझ देता है।

—

3. आत्मसंयम

2 पतरस 1:6– “…और अपने ज्ञान के साथ आत्मसंयम भी।”

ज्ञान प्राप्त करने के बाद, हमें आत्मसंयम विकसित करना चाहिए।

कई लोग ज्ञान और भलाई में परिपूर्ण होते हैं, लेकिन आत्मसंयम में कमजोर होते हैं। वे व्यर्थ की चीजों में समय बर्बाद करते हैं और प्रार्थना और परमेश्वर के साथ समय देने में चूक जाते हैं।

1 थिस्सलुनीकियों 5:8– “…हमें संयमित और सतर्क रहना चाहिए ताकि हम परमेश्वर के निकट समय पा सकें।”

—

4. धैर्य

2 पतरस 1:6– “…और आत्मसंयम के साथ धैर्य भी।”

धैर्य विश्वास में सहनशीलता है। कठिनाइयों में धैर्य न रखने से आध्यात्मिक प्रगति रुक सकती है।

रोमियों 5:3-4 – “…कष्ट धैर्य पैदा करता है; धैर्य स्थिरता

देता है; और स्थिरता आशा देती है।”

—

5. पवित्रता

2 पतरस 1:6– “…और धैर्य के साथ पवित्रता।”

पवित्रता का मतलब है पाप से दूर रहना और ईश्वर के प्रति समर्पित जीवन जीना।

1 पतरस 1:16– “तुम पवित्र रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।”

पवित्रता में प्रार्थना, उपवास और दूसरों को सुसमाचार बताना शामिल है।

6. भाईचारा

2 पतरस 1:7– “…और पवित्रता के साथ भाईचारा।”

भाईचारा मसीह में भाई-बहनों के बीच स्नेह है। इसे प्राप्त करने के लिए प्रयास और समर्पण आवश्यक है।

1 पतरस 1:22 – “…सच्चाई के पालन द्वारा अपने मन को पवित्र
करने के बाद, एक-दूसरे के साथ सच्चे दिल से प्रेम करो।”

—

7. प्रेम

2 पतरस 1:7– “…और भाईचारे के साथ प्रेम।”

यह परमेश्वर का प्रेम है, जो बिना शर्त है।

1 कुरिन्थियों 13:4-8 – प्रेम धैर्यवान है, दयालु है,
ईर्ष्यालु नहीं है, अभिमानी नहीं है…

—

जब हम इन सभी गुणों को अपनाते हैं, तो हम आलसी नहीं रहेंगे, हमें आध्यात्मिक फल मिलेगा, और हम आने वाले आध्यात्मिक कार्यों को समझने में सक्षम होंगे।

2 पतरस 1:8-11 – “…वे आपको आलसी और बिना फल के नहीं रहने देंगे… और अनंत राज्य में प्रवेश का मार्ग खोलेंगे।”

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp